कामनाओं का कुहासा

लगभग एक सप्ताह गुज़र जाने के बाद सत्ताधारी दल के सांस्कृतिक संगठन के प्रदेशाध्यक्ष और जोधपुर के सदस्य ने चन्दन जी को फ़ोन किया, "यहाँ के कार्यकर्ता आपको अपने प्रत्याशी के चुनाव प्रचार के लिए बुलाना चाहते हैं। जोधपुर और आसपास के विधानसभा क्षेत्रों का कार्यक्रम आपके पास आएगा।"

"मगर मैं तो आपके दल का सदस्य नहीं हूँ। नौकरी करता हूँ।"

"उससे क्या हुआ? भाषा अधिकरण के अध्यक्ष तो हैं न?"

"मुझे जोधपुर आप बुलाना चाहते हैं या सत्ता दल ने आपको संदेश या आदेश दिया है?"

"किसी ने नहीं कहा है। हमारे कार्यकर्ताओं ने इच्छा ज़ाहिर की है।"

"क्षमा करें, मैं नहीं आ पाऊँगा।"

"क्यों?"

"राजनीति की ओर मेरा रुझान बिल्कुल नहीं है।"

—पृष्ठ 362

वरिष्ठता, क़द, आयु, दल में महत्त्व, प्रत्येक दृष्टि से विधायक के मंत्री बनने की पूर्ण संभावना थी। हो सकता है, शिक्षामंत्री उन्हें ही बना दिया जाए। यदि ऐसा होता है तो समस्त दुश्चिंताओं पर विराम लग जाएगा। विपक्ष में थे, तब भी चन्दन जी ने उन्हें महत्त्व दिया था। सत्ता में आते ही अपनी ओर से संदेश भेजने वाला व्यक्ति, सक्षमता का आश्रयदाता बन जाने के बाद निश्चय ही, चन्दन जी को पद से हटाने की बात नहीं सोचेगा। जिसे भरोसा है कि किसी को चन्दन जी को निलम्बित करने नहीं देगा, स्वयं कैसे कर सकता है ऐसा?

—पृष्ठ 373

चन्दन जी को मन की बात कहने का यह परम उपयुक्त अवसर प्रतीत हुआ, "अनुमति दें तो एक और ठीक बात कहना चाहता हूँ।"

"हाँ-हाँ, कहिए न?" शिक्षा मंत्री ने सहजतापूर्वक

कहा।

"मुझे आपके विरोधी दल की सरकार ने भाषा अधिकरण का अध्यक्ष मनोनीत किया था। अब आप की सरकार है। यदि आप अपने दल के किसी व्यक्ति को यह पद देना चाहें तो कृपया स्पष्ट बताएँ, मैं त्यागपत्र दे दूँगा। तनावों के बीच काम करने की मेरी आदत नहीं है।"

तपाक से उत्तर आया, "आप किसी दल विशेष के आदमी थोड़े ही हैं चन्दन जी, साहित्यकार हैं। हम पता नहीं कब से आपकी रचनाएँ पढ़ते आ रहे हैं। आप निश्चिंत होकर काम करिए।"

चन्दन जी की गंभीरता, विस्तीर्ण मुस्कुराहट में बदल गई, "आपने भरोसा किया, आभार।"

—पृष्ठ 377

सरकार बदलते ही उत्पन्न हुई आशंका शिक्षा मंत्री से भेंट के तीसरे दिन ही सच हो गई। चन्दन जी के मोबाइल पर फ़ोन आया, "मैं सचिवालय से शिक्षा विभाग का उपसचिव बोल रहा हूँ।"

"जी, नमस्कार।"

"आप चन्दन जी बोल रहे हैं न?"

"जी हाँ।"

"जैसा कि आप जानते हैं, सरकार बदल गई है। बेहतर होगा, आप त्यागपत्र दे दें।" उपसचिव के स्वर में अतिरिक्त विनम्रता थी।

"आप कहेंगे तो दे देंगे मगर अभी दो दिन पहले स्वयं शिक्षा मंत्री ने त्यागपत्र न देने के लिए कहा है।" शिक्षा उपसचिव कुछ पलों के लिए रुके। शायद वे सामने रखे काग़ज़ को देख रहे थे। फिर किंचित त्वरा के साथ बोले, "सॉरी, ग़लती से फ़ोन कर दिया। रियली सॉरी।" फ़ोन कट गया।

—पृष्ठ 380

जब आश्रम में पुरुषों और महिलाओं की आवास व्यवस्था अलग-अलग परिसरों में है तो उन्हें पत्नी के साथ कक्ष देकर ग़ैर बराबरी का व्यवहार क्यों किया गया? भवनों में आवास के लिये निर्धारित कमरों में सब सुविधायें थीं, फिर विशिष्ट अतिथि कक्ष की क्या आवश्यकता थी? अन्य भवनों में

स्वागत कक्ष बने हुए थे। शिकायत करने पर समाधान करने की व्यवस्था स्वागत कक्ष करता था। विशिष्ट अतिथि कक्ष के लिये अलग सेवादार लगाने के पीछे क्या महत्त्वपूर्ण अतिथियों को प्रसन्न रखकर आश्रम के काम कराने की मंशा नहीं थी? विशिष्ट व्यक्तियों के लिये विशिष्टता की अनुभूति कराने वाला विशिष्ट अतिथि कक्ष क्या विशिष्ट लोगों के माध्यम से अकरणीय को करणीय और अवैध को वैध बनाने की प्रवृत्ति का द्योतक नहीं था? सामान्य स्थायी शिष्य और विशिष्ट अस्थायी आगन्तुक में से दूसरे को वरीयता क्यों दी जाती थी?

—पृष्ठ 427